शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -3
March
2025

मूर्तिकला में सौंदर्यशास्त्र और सांस्कृतिक प्रभाव

डॉ. भक्ति अग्रवाल
ललितकला
डॉ. आलोक अग्रवाल
पत्रकारिता एवं जनसंचार
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सारांश

मूर्तिकला कला का एक प्रमुख रूप है, जो विभिन्न सभ्यताओं और संस्कृतियों का प्रतिबिंब होती है। भारतीय मूर्तिकला में सौंदर्यशास्त्र और सांस्कृतिक प्रभाव का गहरा संबंध है, जो धार्मिक, दार्शनिक और सामाजिक परिवर्तनों के माध्यम से विकसित हुआ है। यह शोध पत्र मूर्तिकला के सौंदर्यशास्त्र के सिद्धांतों का विश्लेषण करता है और यह बताता है कि विभिन्न कालखंडों में सांस्कृतिक प्रभावों ने इसकी शैली और विषयवस्तु को कैसे प्रभावित किया है।

1. प्रस्तावना

मूर्तिकला विश्व की सबसे पुरानी कलाओं में से एक है, जो मानव की सौंदर्यबोध और सांस्कृतिक मान्यताओं को मूर्त रूप देती है। भारत में मूर्तिकला का विकास सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर आधुनिक युग तक निरंतर होता रहा है। यह कला धार्मिक आस्थाओं, सामाजिक संरचनाओं और सौंदर्यशास्त्र से प्रभावित होती रही है।

यह शोध पत्र मुख्य रूप से दो पहलुओं पर केंद्रित है -

1. **मूर्तिकला में सौंदर्यशास्त्र** – जिसमें भारतीय और पाश्चात्य सौंदर्यशास्त्र के सिद्धांतों की चर्चा होगी।
2. **सांस्कृतिक प्रभाव** – जिसमें विभिन्न कालों में मूर्तिकला के स्वरूप पर सामाजिक, धार्मिक और ऐतिहासिक प्रभावों का अध्ययन किया जाएगा।

2. मूर्तिकला में सौंदर्यशास्त्र

सौंदर्यशास्त्र कला का वह अंग है, जो सौंदर्य, अनुपात, संतुलन और कलात्मक अभिव्यक्ति के सिद्धांतों को परिभाषित करता है।

2.1 भारतीय मूर्तिकला में सौंदर्यशास्त्र

भारतीय कला सौंदर्यशास्त्र का आधार प्राचीन शास्त्रों और ग्रंथों में मिलता है।

(A) शिल्पशास्त्र एवं नाट्यशास्त्र का प्रभाव

1. शिल्पशास्त्र में मूर्तिकला के अनुपात, मुद्राओं और संरचना का विस्तृत वर्णन मिलता है।
2. नाट्यशास्त्र (भरत मुनि) में रस (भावनात्मक अभिव्यक्ति) का सिद्धांत दिया गया है, जो मूर्तिकला में भी लागू होता है।

(B) प्रमुख सौंदर्यशास्त्रीय विशेषताएँ

1. **त्रिभंग मुद्रा** – शरीर का तीन भागों में विभाजन (सिर, धड़ और पैरों का हल्का मोड़) जो मूर्तिकला में गति और लय उत्पन्न करता है।
2. **शारीरिक अनुपात** – मूर्तियों का निर्माण विशिष्ट गणनाओं पर आधारित होता था, जैसे कि नवताल नियम, जिसमें शरीर की लंबाई को नौ भागों में विभाजित किया जाता था।
3. **आध्यात्मिकता और प्रतीकवाद** – भारतीय मूर्तिकला में सौंदर्य केवल शारीरिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक भी होता है, जैसे बुद्ध की मूर्तियों में ध्यान मुद्रा।

2.2 पाश्चात्य मूर्तिकला में सौंदर्यशास्त्र

यूरोप में मूर्तिकला के सौंदर्यशास्त्र पर ग्रीक और रोमन कला का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जाता है।

1. **यथार्थवाद** – यूनानी मूर्तियों में मानव शरीर की मांसपेशियों, हड्डियों और त्वचा की प्राकृतिकता पर जोर दिया गया।

2. **संतुलन और अनुपात** – लियोनार्डो दा विंची का "विट्रुवियन मैन" मनुष्य के शारीरिक अनुपातों का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है।
3. **शास्त्रीय आदर्शवाद** – रोमन मूर्तियों में पूर्णता और सौंदर्य का समावेश देखा जाता है, जहां चेहरों को पूर्णत: संतुलित रूप में उकेरा जाता था।

3. मूर्तिकला पर सांस्कृतिक प्रभाव

मूर्तिकला विभिन्न सामाजिक, धार्मिक और ऐतिहासिक प्रभावों के तहत विकसित होती है। भारतीय मूर्तिकला में प्रमुख सांस्कृतिक प्रभाव निम्नलिखित हैं -

3.1 सिंधु घाटी सभ्यता (2500-1700 BCE)

प्रमुख मूर्तियाँ: "नर्तकी" और "याजक राजा"

विशेषता: कांस्य और टेराकोटा मूर्तियाँ, यथार्थवाद और लयबद्ध आकृतियाँ।

3.2 मौर्यकाल (321-185 BCE)

सम्राट अशोक के स्तंभ – चमकदार पालिश और बौद्ध धर्म का प्रतीकात्मक प्रभाव।

यक्ष-यक्षिणी मूर्तियाँ – प्रकृति पूजा और लोक परंपराओं से प्रेरित।

3.3 गांधार और मथुरा शैली (100 BCE-300 CE)

गांधार शैली: ग्रीक प्रभाव, बुद्ध की यथार्थवादी मूर्तियाँ, बहुस्तरीय वस्त्र और लहराते बाल।

मथुरा शैली: भारतीय प्रभाव, लाल बलुआ पत्थर से निर्मित, आदर्शीकृत चेहरे और अलंकरण।

3.4 गुप्तकाल (300-600 CE)

"कला का स्वर्ण युग" – इस काल में मूर्तिकला अत्यधिक परिष्कृत हुई।

बुद्ध की मूर्तियाँ: सौम्य, ध्यानमग्न, सरल वस्त्र और सौंदर्यबोध का चरम।

हिंदू मूर्तियाँ: विष्णु, शिव और देवी की मूर्तियाँ, मंदिर वास्तुकला से जुड़ी हुईं।

3.5 दक्षिण भारतीय मूर्तिकला

चोल काल (9वीं-13वीं शताब्दी): कांस्य मूर्तियाँ (नटराज की प्रसिद्ध प्रतिमा)।

होयसला शैली: बेलूर और हलेबिड के मंदिरों में जटिल नक्काशी।

3.6 मुगल एवं औपनिवेशिक काल

मुगल काल में मूर्तिकला की अपेक्षा लघुचित्रकला को अधिक महत्व मिला।

ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में यूरोपीय प्रभाव पड़ा और मूर्तिकला अधिक यथार्थवादी हो गई।

4. आधुनिक युग में मूर्तिकला

1. आधुनिक मूर्तिकारों ने पारंपरिक और समकालीन तत्वों का संयोजन किया।
2. रामकिंकर बैज – भारतीय मूर्तिकला में आधुनिकता का प्रवेश।
3. हेनरी मूर और ऑगस्टे रोडिन का प्रभाव।
4. पब्लिक आर्ट और मूर्तिकला – जैसे दिल्ली में महात्मा गांधी की मूर्तियाँ।

5. निष्कर्ष

मूर्तिकला केवल सौंदर्य या रूपांकन की विधा नहीं है, बल्कि यह संस्कृति, धर्म और समाज का दर्पण भी है। भारतीय मूर्तिकला में सौंदर्यशास्त्र आध्यात्मिकता और प्रतीकवाद से ओतप्रोत है, जबकि पश्चिमी मूर्तिकला यथार्थवाद और आदर्शवाद पर केंद्रित है। भारत में मूर्तिकला पर बौद्ध, हिंदू, जैन और औपनिवेशिक प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जाता है। आधुनिक युग में भी मूर्तिकला समाज के परिवर्तनशील मूल्यों को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम बनी हुई है।

6. संदर्भ

1. कोठारी, सुनील (2004). "भारतीय मूर्तिकला और स्थापत्य". नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत
2. कृष्णमूर्ति, आर. (2016). "The Art and Architecture of India". Penguin Books
3. गुहा-ठाकुरता, तपति (1992). "The Making of a Modern Indian Art". Oxford University Press
4. रोहिंटन, पटेल (2019). "Indian Aesthetics and Sculpture". Routledge